न्यारापन १७

१

निमित्त समझने से स्वत: ही बाप समान बनने का संस्कार प्रैक्टिकल में आता है। अगर निमित्त नहीं समझते तो बापसमान नहीं बन सकते। तो एक निमित्त दूसरा सदा न्यारा और प्यारा। यह बाप की विशेषता है। प्यारा भी बनता और न्यारा भी रहता। न्यारा बनकर प्यारा बनता है। तो बाप समान अर्थात् अति न्यारे और अति प्यारे। औरों से न्यारे और बाप से प्यारे। यह समानता है। बाप की यही दो विशेषताएँ हैं। तो बाप समान सेवाधारी भी ऐसे हैं। इसी विशेषता को सदा स्मृति में रखते हुए सहज आगे बढ़ती जायेंगी। मेहनत नहीं करनी पड़ेंगी। जहाँ निमित्त हैं वहाँ सफलता है ही। वहाँ मेरा-पन आ नहीं सकता। जहाँ मेरा-पन है वहाँ सफलता नहीं। निमित्त भाव सफलता की चाबी है।

२

सदा कमल पुष्प के समान प्रवृति में रहते रह कार्य करते हुए न्यारे अर्थात् बाप के प्यारे समझते हो? जितना न्यारा होगा उसके न्यारे पन की निशानी होगी – बाप का प्यारा होगा। बाप के प्यारे कहाँ तक बने हैं – प्यारे की निशानी क्या है? जिससे प्यार होता है उसकी याद स्वत: रहती है। याद करना नहीं पड़ता। अगर ऐसा अनुभव होता तो समझो प्यारे हैं। प्यार की निशानी स्वत: याद, अगर मेहनत करनी पड़ती है तो कम प्यार है। जहाँ जाएँ वहाँ बाप और बच्चे का मिलन मेला ही हो, जैसे कम्बाइन्ड होते हैं तो कभी एक दो से अलग नहीं हो सकते, ऐसे अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करो। जहाँ जाएँ वहाँ बाप ही बाप, इसको कहा जाता है निरनतर योगी। बाप की याद मुश्किल न हो बाप को भूलना मुश्किल हो। जैसे आधाकल्प करना मुश्किल था वैसे अब संगम पर भूल मुश्किल हो, कोई कितना भी भुलाने की कोशिश करे लेकिनद अभुल। ऐसे पक्के अंगद के समान, संकल्प रूपी नाखून भी माया हिला न सके – ऐसे ही बाप के अति प्यारे हैं।

आज बापदादा अपने सर्व कमल-आसनधारी श्रेष्ठ बच्चों को देख रहे हैं। कमल-आसन ब्राह्मण आत्माओं की श्रेष्ठ स्थिति की निशानी है। आसन स्थित, बैठने का साधन है। ब्राह्मण आत्मायें कमल-स्थिति में स्थित रहतीं, इसलिए कमल-आसनधारी कहलाती हैं। जैसे ब्राह्मण सो देवता बनते हो, ऐसे आसनधारी सो सिंहासनधारी बनते हैं, जितना समय बहुतकाल वा अल्पकाल राज्य सिंहासनधारी बनते हैं। कमल-आसन विशेष ब्रह्मा बाप समान अति न्यारी और अति प्यारी स्थिति का सिम्बल है। आप ब्राह्मण बच्चे फालो फादर करने वाले हो, इसलिए बाप समान कमल-आसनधारी हो। अति न्यारे की निशानी है - वह बाप और सर्व परिवार के अति प्यारे बनेंगे। न्यारापन अर्थात् चारों ओर से न्यारा।

(१) अपने देह भान से न्यारा। जैसे साधारण दुनियावी आत्माओं को चलते-फिरते, हर कर्म करते स्वत: और सदा देह का भान रहता ही है, मेहनत नहीं करते कि मैं देह हूँ, न चाहते भी सहज स्मृति रहती ही है। ऐसे कमल-आसनधारी ब्राह्मण आत्मायें भी इस देहभान से स्वत: ही ऐसे न्यारे रहें जैसे अज्ञानी आत्म-अभिमान से न्यारे हैं। हैं ही आत्म-अभिमानी। शरीर का भान अपने तरफ आकर्षित न

करे। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, चलते-फिरते फरिश्ता-रूप वा देवता-रूप स्वत: स्मृति मे रहा। ऐसे नैचुरल देही-अभिमानी स्थिति सदा रहे - इसको कहते हैं देहभान से न्यारे। देहभान से न्यारा ही परमात्म-प्यारा बन जाता है।

(२) इस देह के जो सर्व सम्बन्ध हैं, दृष्टि से, वृत्ति से, कृति से - उन सबसे न्यारा। देह का सम्बन्ध देखते हुए भी स्वत: ही आत्मिक, देही सम्बन्ध स्मृति में रहे। इसलिए दीपावली के बाद भैया-दूज मनाया ना। जब चमकता हुआ सितारा वा जगमगाता अविनाशी दीपक बन जाते हो, तो भाई-भाई का सम्बन्ध हो जाता है। आत्मा के नाते भाई-भाई का सम्बन्ध और साकार ब्रह्मावंशी ब्राह्मण बनने के नाते से बहन-भाई का श्रेष्ठ शुद्ध सम्बन्ध स्वत: ही स्मृति में रहता है। तो न्यारापन अर्थात् देह और देह के सम्बन्ध से न्यारा।

(३) देह के विनाशी पदार्थों में भी न्यारापन। अगर कोई पदार्थ किसी भी कर्मेन्द्रिय को विचलित करता है अर्थात् आसक्ति-भाव उत्पन्न होता है तो वह न्यारापन नहीं रहता। सम्बन्ध से न्यारा फिर भी सहज हो जाते लेकिन सर्व पदार्थों की आसक्ति से न्यारा - 'अनासक्त' बनने में रॉयल रूप की आसक्ति रह जाती है। सुनाया था ना कि

आसक्ति का स्पष्ट रूप इच्छा है। इसी इच्छा का सूक्ष्म, महीन रूप है - अच्छा लगना। इच्छा नहीं है लेकिन अच्छा लगता है - यह महीन रूप 'अच्छा' के बदले 'इच्छा' का रूप भी ले सकता है। तो इसकी अच्छी रीति चेकिंग करो कि यह पदार्थ अर्थात् अल्पकाल सुख के साधन आकर्षर्ज्ञित तो नहीं करते हैं? कोइ भी साधन समय पर प्राप्त न हो ता सहज साधन अर्थात् सहजयोग की स्थिति डगमग तो नहीं होती है? कोई भी साधन के वश, आदत से मजबूर तो नहीं होते? क्योंकि यह सर्व पदार्थ अर्थात् साधन प्रकृति के साधन हैं। तो आप प्रकृतिजीत अर्थात् प्रकृति के आधार से न्यारे कमल-आसनधारी ब्राह्मण हो। मायाजीत के साथ-साथ प्रकृतिजीत भी बनते हो। जैसे ही मायाजीत बनते हो, तो माया बार-बार भिन्न-भिन्न रूपों में ट्रायल करती है। कि मेरे साथी मायाजीत बन रहे हैं? तो भिन्न-भिन्न पेपर लेती है? प्रकृति का पेपर है - साधनों द्वारा आप सभी को हलचल में लाना। जैसे - पानी। अभी यह कोई बड़ा पेपर नहीं आया है। लेकिन पानी से बने हुए साधन, अग्नि द्वारा बने हुए साधन, ऐसे हर प्रकृति के तत्वों द्वारा बने हुए साधन मनुष्य आत्माओं के जीवन का अल्पकाल के सुख का आधार हैं। तो यह सब तत्व पेपर लेंगे।

अभी तो सिर्फ पानी की कमी हुई है लेकिन पानी द्वारा बने हुए पदार्थ जब प्राप्त नहीं होंगे तो असली पेपर उस समय होगा। यह प्रकृति द्वारा पेपर भी समय प्रमाण आने ही हैं। इसलिए, देह के पदार्थों की आसक्ति वा आधार से भी निराधार 'अनासक्त' होना है। अभी तो सब साधन अच्छी तरह से प्राप्त हैं, कोई कमी नहीं है। लेकिन साधनों के होते, साधनों को प्रयोग में लाते, योग की स्थिति डगमग न हो। योगी बन प्रयोग करना - इसको कहते हैं न्यारा। है ही कुछ नहीं, तो उसको न्यारा नहीं कहेंगे। होते हुए निमित्त-मात्र, अनासक्त रूप से प्रयोग करना; इच्छा वा अच्छा होने के कारण नहीं यूज़ करना - यह चेंकिग जरूर करो। जहाँ इच्छा होगी, फिर भला कितनी भी मेहनत करेंगे लेकिन इच्छा, अच्छा बनने नहीं देगी। पेपर के समय मेहनत करने में ही समय बीत जायेगा। आप साधना में रहने का प्रयत्न करेंगे और साधन अपने तरफ आकर्षित करेंगे। आप युद्ध कर, मेहनत कर साधनों की आकर्षण को मिआने का प्रयत्न करते रहेंगे तो युद्ध की कशमकशा में ही पेपर का समय बीत जायेगा। रिजल्ट क्या हुई? प्रयोग करने वाले साधन ने सहयोगी स्थिति से डगमग कर दिया ना। प्रकृति के पेपर तो अभी और रफ्तार से आने

वाले हैं। इसलिए, पहले से ही पदार्थों के विशेष आधार - खाना, पीना, पहनना, चलना, रहना और सम्पर्क में आना - इन सबकी चेकिंग करो कि कोई भी बात महीन रूप में भी विघ्न-रूप तो नहीं बनती? यह अभी से ट्रायल करो। जिस समय पेपर आयेगा उस समय ट्रायल नहीं करना, नहीं तो फेल होने की मार्जिन है। योग-स्थिति अर्थात् प्रयोग करते हुए न्यारी स्थिति। सहज योग की साधना साधनों के ऊपर अर्थात् प्रकृति के ऊपर विजयी हो। ऐसा न हो उसके बिना तो चल सकता लेकिन इसके बिना रह नहीं सकते, इसलिए डगमग स्थिति हो गई... इसको भी न्यारी जीवन नहीं कहेंगे। ऐसी सिद्धि को प्राप्त करो जो आपके सिद्धि द्वारा अप्राप्ति भी प्राप्ति का अनुभव कराये। जैसे स्थापना के आरम्भ में आसक्ति है वा नहीं, उसकी ट्रायल के बीच-बीच में जानबूझकर प्रोग्राम रखते रहे। जैसे, १५ दिन सिर्फ ढ़ोढ़ा और छाछ खिलाई, गेहूँ होते भी यह ट्रायल कराई गई। कैसे भी बीमार १५ दिन इसी भोजन पर चले। कोई भी बीमार नहीं हुआ। दमा की तकलीफ वाले भी ठीक हो गये ना। नशा था कि बापदादा ने प्रोग्राम दिया है! जब भक्ति में कहते हैं 'विष भी अमृत हो गया', यह तो छाछ थी! निश्चय और नशा हर परिस्थिति

में विजयी बना देता है। तो ऐसे पेपर भी आयेंगे - सूखी रोटी भी खानी पड़ेगी। अभी तो साधन हैं। कहेंगे - दांत नहीं चलते, हज़म नहीं होता। लेकिन उस समय क्या करेंगे ? जब निश्चय, नशा, योग की सिद्धि की शक्ति होती है तो सूखी रोटी भी नर्म रोटी का काम करेगी, परेशान नहीं करेगी। आप सिद्धि-स्वरूप की शान में हो तो कोई भी परेशान नहीं कर सकता है। जब हठयोगियों के आगे शेर बिल्ली बन जाता, सांप खिलौना बन जाता, तो आप सहज राजयोगी, सिद्धि-स्वरूप आत्माओं के लिए यह सब कोई बड़ी बात नहीं। है तो आराम से यूज़ करो लेकिन समय पर धोखा न दे - यह चेक करो। परिस्थिति, स्थिति को नीचे न ले आये। देह के सम्बन्ध से न्यारा होना सहज है लेकिन देह के पदार्थों से न्यारा होना - इसमें बहुत अच्छा अटेन्शन (ध्यान) चाहिए।

(४) पुराने स्वभाव, संस्कार से न्यारा बनना है। पुरानी देह के स्वभाव और संस्कार भी बहुत कड़े हैं। मायाजीत बनने में यह भी बड़ा विघ्न-रूप बनते हैं। कई बार बापदादा देखते हैं - पुराने स्वभाव, संस्कार रूपी सांप खत्म भी हो जाता लेकिन लकीर रह जती जो समय आने पर बार-बार धोखा दे देती। यह कड़े स्वभाव

और संस्कार कई बार इतना माया के वशीभूत बना देते हैं जो रांग को रांग समझते ही नहीं। 'महसूसता-शक्ति' समाप्त हो जाती है। इससे न्यारा होना - इसकी भी चेंकिग अच्छी तरह चाहिए। जब महसूसता- शक्ति समाप्त हो जाती है तो और ही एक झूठ के पीछे हजार झूठ अपनी बात को सिद्ध करने के लिए बोलने पड़ते हैं। इतना परवश हो जाते हैं! अपने का सत्य सिद्ध करना - यह भी पुराने संस्कार के वशीभूत की निशानी है। एक है यथार्थ बात स्पष्ट करना, दूसरा है अपने को जिद्य से सिद्ध करना। तो जिद्य से सिद्ध करने वाले कभी सिद्धि-स्वरूप नहीं बन सकते हैं। यह भी चेक करो कि कोई भी पुराना स्वभाव, संस्कार अंश-मात्र भी छिपे हुए रूप में रहा हुआ तो नहीं है? समझा? इन चार ही बातों से न्यारा जो है उसको कहेंगे बाप का प्यारा, परिवार का प्यारा। ऐसे कमल-आसनधारी बने हो? इसी को ही कहेंगे फालो फादर। ब्रह्मा बाप भी कमल-आसनधारी बने तब नम्बरवन बाप के प्यारे बने, ब्राह्मणों के प्यारे बने। चाहे व्यक्त रूप में, चाहे अभी अव्यक्त रूप में। अभी भी हर एक ब्राह्मण के दिल से क्या निकलता है? हमारा ब्रह्मा बाबा। यह नहीं अनुभव करते कि हमने तो साकार में देखा नहीं। लेकिन

नयनों से नहीं देखा, दिल से देखा, बुद्धि के दिव्य नेत्रों द्वारा देखा, अनुभव किया। इसलिए, हर ब्राह्मण दिल से कहता - ''मेरा ब्रह्मा बाबा''। यह प्यारेपन की निशानी है। चारों ओर के न्यारेपन ने विश्व का प्यारा बना दिया। तो ऐसे ही चारों ओर के न्यारे और सर्व के प्यारे बनो। समझा ?